श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

रूद्राष्टकम्

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

श्रीमद्भागवत रसिक कुटुंब

श्रीमद् भागवत का यह सार
भगवद् भक्ति ही आधार

रूद्राष्टकम्

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं(म्),
विभुं(म्) व्यापकं(म्) ब्रह्मवेदस्वरूपम्।
निजं(न्) निर्गुणं(न्) निर्विकल्पं(न्) निरीहं(ञ्),
चिदाकाशमाकाशवासं(म्) भजेऽहम् ॥ 1॥

निराकारमोङ्कारमूलं(न्) तुरीयं(ङ्),
गिराज्ञानगोतीतमीशं(ङ्) गिरीशम्।
करालं(म्) महाकालकालं(ङ्) कृपालं(ङ्),
गुणागारसंसारपारं(न्) नतोऽहम् ॥ 2॥

तुषाराद्रिसंकाशगौरं(ङ्) गभिरं(म्),
मनोभूतकोटिप्रभा श्री शरीरम्।
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनी चारुगङ्गा,
लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजङ्गा ॥ 3॥

चलत्कुण्डलं(म्) भ्रू सुनेत्रं(म्) विशालं(म्),
प्रसन्नाननं(न्) नीलकण्ठं(न्) दयालम्।
मृगाधीशचर्माम्बरं(म्) मुण्डमालं(म्),
प्रियं(म्) शङ्करं(म्) सर्वनाथं(म्) भजामि ॥ 4॥

प्रचण्डं(म्) प्रकृष्टं(म्) प्रगल्भं(म्) परेशम्,
अखण्डम् अजं(म्) भानुकोटिप्रकाशं(म्)।
त्र्यः(श्)शूलनिर्मूलनं(म्) शूलपाणिं(म्),
भजेऽहं(म्) भवानीपतिं(म्) भावगम्यम् ॥ 5॥

कलातीतकल्याण कल्पान्तकारी,
सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी।
चिदानन्दसन्दोह मोहापहारी,
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥ 6॥

न यावद् उमानाथपादारविन्दं(म्),
भजन्तीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत्सुखं(म्) शान्ति सन्तापनाशं(म्),
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं(न्) ॥ 7॥

न जानामि योगं(ञ्) जपं(न्) नैव पूजां(न्),
नतोहं(म्) सदा सर्वदा शम्भुतुभ्यम् ।
जराजन्मदुः(ख्)खौघ तातप्यमानं(म्),
प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो ॥ 8॥

रूद्राष्टकं इदं प्रोक्तं विप्रेण हर्षोतये
ये पठन्ति नरा भक्तयां तेषां शंभो प्रसीदति।।
॥ इति श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतं श्रीरुद्राष्टकं सम्पूर्णम् ॥